**International Journal of Advanced Research and Development**
**ISSN: 2455-4030**
**Impact Factor: RJIF 5.24**
**www.advancedjournal.com**
**Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 223-225**

# हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा

Suman Devi
M.A., M.Ed., NET Qualified, MDU, Rohtak, Haryana, India

**सारांश**
हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की एक सुदीर्घ परम्परा है। विद्वानों की सहमति है कि इस परम्परा का 'टर्निंग पॉइंट' आचार्य शुक्ल का साहित्येतिहास लेखन में आना है। इतिहास लेखन की परंपरा को 2 रूपों में बांटा गया है– अनौपचारिक तथा औपचारिक। अनौपचारिक लेखन की शुरूआत 19वीं शताब्दी में हुई जिसमें भक्तमाल, कविमाला, कालिदास हजारा, आदि ग्रंथ शामिल हैं। औपचारिक इतिहास लेखन 1839 ई. में शुरू हुआ। आचार्य द्विवेदी के बाद कई विद्वानों ने साहित्येतिहास लेखन में गंभीर प्रयास किया है। ऐसे विद्वानों तथा उनके ग्रंथों की संक्षिप्त जानकारी नीचे बिंदुओं में दी गई है।

**मूल शब्दः** हिंदी साहित्य, इतिहास लेखन, साहित्येतिहास लेखन

**प्रस्तावना**

### 1. डॉ. रामकुमार वर्मा कृत "हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास"

1. यह 750–1750 ई. तक का इतिहास है।
2. इन्होंने भक्तिकाल की धाराओं के कठिन नामों को सरल बनाया– निर्गुण ज्ञानाश्रयी धारा को 'संतकाव्य' कहा वह निर्गुण प्रेमाश्रयी धारा को 'प्रेमकाव्य' कहा।
3. इन्होंने वीरगाथा काल के स्थान पर नयानाम "संधिकाल एवं चारणकाल" दिया।
4. इन्होंने 'स्वयंभू' को हिन्दी का प्रथम कवि माना।

### 2. गणपतिचंन्द्र गुप्त कृत "हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास"

1. प्रथमतः अति वैज्ञानिक पद्धति को अपनाया।
2. शुक्ल जी की कई मान्यताओं को खण्डन किया विशेषतः सूफी काव्य को मसनबी काव्य कहने का खण्डन।
3. कहीं–कहीं यही अति वैज्ञानिकता उनका दोष बन गई है। इससे काल विभाजन न केवल ज्यादा हो गया है बल्कि उलझ भी गया है।

### 3. डॉ. नगेन्द्र द्वारा संपादित "हिन्दी साहित्य का इतिहास"

1. यह एक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ है।
2. संपादित होने के कारण इसमें इतिहास बोध की समस्या बनी हुई है क्योंकि विभिन्न लेखकों की इतिहास दृष्टियाँ अलग–अलग हैं किंतु तब भी यह प्रयास अवश्य दिखता है कि यथासंभव एक ही दृष्टिकोण का पालन किया जाए।

### 4. डॉ. बच्चन सिंह कृत

"हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास"

1. आचार्य शुक्ल द्वारा लिखित इतिहास के बाद जितने भी इतिहास लिखे गये हैं, वे या तो शुक्ल जी के समर्थन में है या विरोध में, कोई भी उनके इतिहास से मुक्त नहीं है। इसलिए आवश्यक है कि शुक्ल जी के प्रभावों से मुक्त रहते हुए नया इतिहास लिखा जाए। इसलिए इन्होंने अपने इतिहास को 'दूसरा इतिहास' कहा।
2. इन्होंने काल–विभाजन तथा नामकरण में काफी परिवर्तन किया है। आदिकाल, मध्यकाल व आधुनिक काल संज्ञाओं को ये भ्रामक मानते हैं। ये कहते हैं कि "आदिकाल नाम भ्रामक है। इससे बाबा आदम के जमाने का बोध होता है।" इन्होंने आदिकाल को 'अपभ्रंशकालः जातीया साहित्य' नाम दिया। इनके अनुसार भक्तिकाल को मध्यकाल नहीं कहना चाहिए क्योंकि यह जकड़ी हुई मनोवृत्ति का परिचायक है। रीतिकाल को उत्तर मध्यकाल कहना इन्हें गणितीय खेल लगता है।

### 5. डॉ. रामविलास शर्मा का साहित्येतिहास लेखन

1. डॉ. रामविलास शर्मा मार्क्सवादी चिंतक और इतिहासकार हैं जिन्होंने न सिर्फ साहित्येतिहास बल्कि देश के आर्थिक, राजनीतिक इतिहास पर भी गंभीर लेखन किया है। उन्होंने हिन्दी साहित्य के इतिहास पर कोई व्यवस्थित ग्रंथ तो नहीं लिखा किंतु अपनी कई पुस्तकों जैसे 'भारतेन्दु युग', 'महावरी प्रसाद द्विवेदी और उनका युग', 'निराला की साहित्य साधना' इत्यादि में हिन्दी साहित्य के इतिहास के कई पक्षों का विशलेषण किया है।

डॉ. रामविलास शर्मा का इतिहासबोध समाजवादी यथार्थवाद से प्रेरित है जो मार्क्सवाद पर आधारित है। इसके अंतर्गत माना जाता है कि कोई भी साहित्यिक या सामाजिक घटना मूलतः अर्थव्यवस्था के ढाँचे से निर्धारित होती है; इसके अतिरिक्त वही साहित्य प्रामाणिक है जो समाज में विद्यमान शोषण व दमन की वास्तविकताओं को उभारता है।

डॉ. शर्मा के अनुसार भक्तिकाल में कबीर व तुलसी जैसे कवि गहरे इतिहासबोध से संपन्न हैं क्योंकि उन्होंने अपने समय की सामती ताकतों का डटकर मुकाबला किया। इस दृष्टि से उनका निबंध 'तुलसी साहित्य में सामंत विरोधी मूल्य' अत्यंत प्रामाणिक है। इसमें उन्होंने दिखाया है कि कैसे तुलसीदास अपने समय की मूल समस्याओं जैसे गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी को साहित्य की अंतर्वस्तु बनाते हैं। उन्होंने हिन्दी व अन्य आर्यभाषाओं के इतिहास पर भी गहराई से विचार किया है और मध्यकालीन दौर में हिन्दी जातीयता का निर्माण की ऐतिहासिक स्थितियों को सविस्तार समझाया है।

डॉ. शर्मा का इतिहासबोध आधुनिक रचनाकारों के सदंर्भ में ज्यादा स्पष्ट हुआ है, विशेषतः भारतेन्दु महावरी प्रसाद द्विवेदी और प्रेमचंद के संदर्भ में । भारतेन्दु युग की व्याख्या में उन्होंने विदेशी पूंजीवाद के कमजोर होने और स्वदेशी पूंजीवाद के उभरने की प्रक्रिया का गहन अध्ययन करते हुए तत्कालीन साहित्य को उससे जोड़कर दिखाया है । महावीर प्रसाद द्विवेदी का महत्वपूर्ण योगदान उनकी नजर में 'सपत्तिशास्त्र' की रचना है, जो आर्थिक शोषण व दमन की वास्तविकता का पर्दाफाश करती है। प्रेमचंद के इतिहासबोध को लेकर वे यहाँ तक दावा करते हैं कि यदि 1915–1936 ई. के समय का इतिहास नष्ट हो जाए तो प्रेमचंद के उपन्यासों व कहानियों के आधार पर उसे ज्यादा प्रामाणिकता से लिखा जा सकता है।

गौरतलब है कि मार्क्सवादी विचारधारा का गहरा प्रभाव होने पर भी डॉ रामविलास शर्मा इसके अंध–अनुयायी नहीं है। उन्होंने स्वयं को जड़ मार्क्सवादी विचारकों की मान्यताओं से अलग रखा है। उनका मत है कि साहित्य समाज की आर्थिक स्थितियों का प्रतिबिम्ब मात्र नहीं होता बल्कि उसकी एक स्वायत्तता भी होती है। वे साहित्य के संदर्भ में 'इतिहास के स्थान पर 'परंपरा' शब्द का प्रयोग करते हैं। 'साहित्य' के संबंध में उनका मत है– "साहित्य मनुष्य के संपूर्ण जीवन से संबद्ध है। आर्थिक जीवन के अलावा मनुष्य एक प्राणी के रूप में भी अपना जीवन बिताता है। साहित्य में उसकी बहुत–सी आदिम भावनाएँ प्रतिफलित होती हैं, जो उसे प्राणिमात्र से जोड़ती हैं। इस बात के बार–बार कहने में कोई हानि नहीं है कि साहित्य विचारधारा–मात्र नहीं है, उसमें मनुष्य का इन्द्रियबोध, उसकी भावनाएँ, आंतरिक प्रेंरणाएँ भी व्यंजित होती हैं।" कहने की आवश्यकता नहीं है कि उनकी ये मान्यताएँ सामान्य मार्क्सवादी से अलग हैं।

साहित्येतिहास के क्षेत्र में रामविलास शर्मा की की सबसे महत्त्वपूर्ण अवधारणात्मक स्थापना 'हिंदी जाति' की है। उनका मत है कि किसी भी भाषा के साहित्यि का इतिहास लिखने के लिए उस भाषिक समाज के गठन का स्वरूप क्या है, यह जानना जरूरी है। वे साहित्य का संबंध जातीय अस्मिता से जोड़ते हैं। उनके अनुसार 'समाज–व्यवस्था' तथा 'जातीय अस्मिता' दो अलग इकाईयाँ हैं। वे जातीयता की सबसे महत्त्वपूर्ण पहचान भाषा को मानते हैं। वे लिखते हैं– "हिंदी, बंगला, मराठी, तमिल आदि भाषाए। बोलने वाले समुदायों को 'जाति' कहते हैं।"

डॉ रामविलास शर्मा ने अपनी 'हिंदी जाति' की अवधारणा के माध्यम से हिंदी साहित्येतिहास को नवीन दृष्टि प्रदान करते हुए उसके स्वीकृत ढाँचे में परिवर्तन उपस्थित किया है। हिंदी के काल विभाजन के संदर्भ में वे लिखते हैं' "शुक्लजी का आदिकाल वास्तविक मध्यकाल है, हिंदी जनपदों के इतिहास का 'सांमतकाल' है। वीरगाथा–काल 'रीतिवाद' का प्रथम उत्थान है।"

डॉ रामविलास शर्मा हिंदी साहित्य में आरंभ से ही दो धाराएँ लक्षित करते हैं एक रीतिवादी धारा और दूसरा लोकजागरणवादी धारा। ऐसी सामान्य धारणा रही है कि डॉ रामविलास शर्मा ने भक्तिकाव्य को लोकजागरण का काव्य माना है। लेकिन ध्यातव्य है कि रामविलास शर्मा की दृष्टि में 'लोकजागरण का काव्य' और 'भक्तिकाव्य' पर्याय नहीं हैं। उनका स्पष्ट मत है कि जो भी काव्य सामंती रुढ़ियों से रहित है, वह लोकजागरण का काव्य है। निस्संदेह भक्तिकाव्य इसका सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है। डॉ रामविलास शर्मा लोकजागरण की संपूर्ण परंपरा को अपने साहित्येतिहास लेखन में उपस्थित करते हैं। वे विद्यापति से इस परपंरा को लक्षित करते हुए अमीर खुसरो, भक्त कवियों, रहीम, सेनापति, भूषण, गिरधर कविराय, धनानंद, भारतेंदु, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रेमचंद, निराला, केदारनाथ अग्रवाल जैसे रचनाकारों को सम्मिलित करते हैं।

आधुनिक काल में भारतेंदु हरिश्चंद्र से जो नवजागरण की चेतना दिखाई देनी शुरू होती है उसके संबंध में डॉ रामविलास शर्मा का अभिमत है कि "वह नई परिस्थितियों में, पुराने लोकजागरण का विकास है।"

हिंदी साहित्य में आधुनिकता के आरंभ को लेकर भी डॉ रामविलास शर्मा की धारणा पारंपरिक धारणा से भिन्न है। वे प्रचलित धारणा के अनुरूप आधुनिकता का आरंभ भारतेंदु युग से नहीं मानते बल्कि भक्तिकाल से ही आधुनिकता का आरंभ मानते हैं जबकि भारतेंदु युग की आधुनिकता को उसके विकास के रूप में देखते हैं। वे लिखते हैं– " वास्तव में हमारा आधुनिक काल शुक्लजी के पूर्व मध्यकाल भक्तिकाल का विकास है, किंतु उत्तर मध्यकाल रीतिकाल का निषेध है।" आधुनिकता के उदय के संबंध में उनका मत है– "आधुनिकता अंग्रेजी राज की देन नहीं है। उसका विकास इस राज के विरुद्ध संघर्ष के दौरान हुआ है। वह अंग्रेजी साहित्य की नकल नहीं है, वह पुराने साहित्य की सामंतविरोधी उपलब्धियों की बुनियाद पर विकसित हुआ है।

जातीय चेतना और लोकजागरण डॉ रामविलास शर्मा के साहित्यिक निर्णयों की कसौटी है। इसी आधार पर वे प्रत्येक युग एवं इसी कारण स्वतंत्रता के बाद वे दो तरह की आधुनिकताओं को प्रचलित पाते हैं। एक आधुनिकता वह है जो हिंदी काव्य की जातीय परंपरा से जुड़ी हुई है और दूसरी वह है जो इससे विच्छिन्न है और पश्चिमी आधुनिकता से जन्मी है। नई कविता पर भी रामविलास शर्मा पश्चिमी आधुनिकता और पश्चिमी अस्तित्ववादी दर्शन को अपनाने के कारण ही प्रहार करते हैं।

इतिहासकार डॉ. रामविलास शर्मा का एक पक्ष 'निराला की साहित्य साधना' में भी उभरा है जो हिन्दी साहित्य की आज तक की सर्वश्रेष्ठ जीवनी मानी जाती है। यह जीवनी सिर्फ निराला की जीवनी न होकर उस पूरे ऐतिहासिक दौर की कथा है जिसने अने सामाजिक–आर्थिक ढाँचे के तहत निराला जैसे कवि को जन्म दिया।

डॉ. शर्मा की सीमा यह है कि अपने मार्क्सवादी आग्रह के कारण कहीं–कहीं वे इतिहास की व्याख्या एकांगी नजरिये से करने लगते हैं। इसके अतिरिक्त, उनकी शैली कहीं–कहीं इतनी आक्रामक हो जाती है कि इतिहासकार की तटस्थता भंग होने लगती है। तब भी हिंदी साहित्येतिहास लेखन में उनका योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने हिन्दी साहित्येतिहास को मार्क्सवादी नजरिये से देखने की जो शुरूआत की उस पर आगे चलकर शिवादान सिंह चौहान, डॉ. नामवर सिंह तथा डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने हिन्दी साहित्य के इतिहास की परंपरा को आगे बढ़ाया। समग्रतः हम देख सकते हैं कि अपने व्यापक अनुसंधान, गहन दृष्टि और गंभीर वैचारिकता के कारण रामविलास शर्मा हिंदी साहित्येतिहास –लेखन परंपरा में बड़ा हस्तक्षेप उपस्थित करते हैं और उसे नई दिशाँए देने का प्रयास करते हैं। इस दृष्टि से हिंदी साहित्येतिहास परंपरा में उनका अद्वितीय योगदान है।

### 6. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी कृंत

"हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास"

यह अति संक्षिप्त कलेवर में लिखित एक सुलझा हुआ इतिहास ग्रंथ है, जो नये पाठक में आधारभूत समझ पैदा करने में सक्षम है।

### 7. नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा संपादित

"हिंदी साहित्य का वृहत् इतिहास"

यह नागरी प्रचारिणी सभा की व्यापक परियोजना है जिसमें 16

खण्डों में हिन्दी साहित्य का विस्तृत इतिहास लिखा जा रहा है। इसका कुछ हिस्सा प्रकाशित हुआ है, जैसे– रीतिकाल छठा खण्ड। यह निश्चित रूप से प्रशंसनीय प्रयास है। इसमें उर्दू साहित्य को हिंदी साहित्य का भाग माना गया है। इतिहास बोध की समस्या इसमें भी है क्योंकि शताधिक लेखक मिलकर यह लिख रहे हैं। सामान्यतः आचार्य शुक्ल के ढाँचे को इसमें स्वीकार किया गया है।

### 8. दलित व नारी विमर्श

हाल ही में दलित लेखन और नारी लेखन की परम्परा से जुड़े कुछ चिन्तकों ने साहित्येतिहास लेखन के क्षेत्र में भी काम कियाहै। डॉ. धर्मवीर, ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिषराय तथा जयप्रकाश कर्दम इत्यादि लेखकों ने दलित दृष्टिकोण से इतिहास के कुछ प्रसंगों को उठाया है। इनका तर्क है कि दलित व्यक्ति ही दलितों की समस्या को समझ सकता है क्योंकि 'स्वयं वेदना' और 'संवेदना' में अन्तराल समाप्त नहीं किया जा सकता। इसी दृष्टिकोण से इन्होंने प्रेमचन्द की रचनाओं जैसे 'कफन' और 'रंगभूमि' पर प्रश्नचिन्ह भी लगाए हैं। नारी लेखन के दृष्टिकोण से डॉ. सुमन राजे ने 'हिंदी साहित्य का आधा इतिहास' नामक पुस्तक लिखी है जिसमें उन महिला लेखकों को प्राथमिकता दी गई है, जिन्हें सामान्यतः पर्याप्त महत्व नहीं दिया गया।

### निष्कर्ष

सम्पूर्ण विवेचन से स्पष्ट है कि हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परम्परा में इतिहास दर्शन का विकास आचार्य शुक्ल के बाद से कोई विभिन्न दिशाओं में हुआ है। वस्तुतः समाज और स्थितियों के परिवर्तन के साथ इतिहास बोध का बदलना पूर्णतः स्वाभाविक है और यह दावा कभी नहीं किया जा सकता है कि कोई एक इतिहास दर्शन अपने आप में सम्पूर्ण है। यह एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है और संतोष की बात यह है कि हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परम्परा में यह प्रक्रिया अत्यंत बेहतर तरीके से सम्पन्न हुई है और हो रही है।

### सन्दर्भ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ. नगेन्द्र
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ. रामचन्द्र शुक्ल
3. दृष्टि हिन्दी साहित्य का इतिहास